पांडिचेरी विश्वविद्यालय
PONDICHERRY UNIVERSITY
हिंदी विभाग / DEPARTMENT OF HINDI

राष्ट्रीय संगोष्ठी / NATIONAL SEMINAR (ऑनलाइन / ONLINE)

हलधर नाग के काव्य-संसार के परिप्रेक्ष्य में लोक - साहित्य पर विमर्श

कवि हलधर नाग का नाम आज भारतीय साहित्य में किसी परिचय का मोहताज नहीं है। अपनी कविताओं के माध्यम से हलधर नाग ने पश्चिम ओड़िशा की बहु उपेक्षित भाषा संबलपुरी-कोसली में प्राण फूंक कर नई पहचान प्रदान की है। वे सादा जीवन उच्च उच्च विचार के जीवंत उदाहरण हैं। वे सादा जीवन उच्च उच्च विचार के जीवंत उदाहरण हैं। हलधर वैश्विक चिंतन के साथ स्थानीय स्तर पर योगदान करने वाले मौखिक परंपरा के मधुर कवि रत्न हैं। उन्होंने जितनी भी कविताएं और 20 महाकाव्य अभी तक लिखे हैं, वे सब उन्हें ज़ुबानी याद हैं। जहाँ भी वे अपनी कविता गाते हैं, वहाँ हज़ारों काव्य-प्रेमी इकट्ठे हो जाते हैं। उनकी इस लोकप्रियता की वजह से सहज ही वे 'लोककवि रत्न' के नाम से प्रसिद्ध हैं। अपने व्यक्तित्व-कृतित्व से वे इतने प्रभावशाली बन गए हैं कि 'पदमश्री' उपाधि वरण करना, विश्वविद्यालयों की मानद डॉक्टरेट का अलंकरण अपने आप संभव हो गया।

हलधर का जन्म 1950 में ओडिशा के बरगढ़ में एक गरीब परिवार में हुआ था। जब वे 10 वर्ष के थे तभी उनके पिता की मृत्यु के साथ उनका संघर्ष शुरू हो गया। तब उन्हें मजबूरी में तीसरी कक्षा के बाद स्कूल छोड़ना पड़ा। घर की अत्यन्त विपन्न स्थिति के कारण मिठाई की दुकान में बर्तन धोने पड़े। दो साल के बाद गाँव के सरपंच ने हलधर को पास ही के एक स्कूल में खाना पकाने के लिए नियुक्त कर लिया जहाँ उन्होंने 16 वर्ष तक काम किया। आगे उन्होंने बैंक से 1000 रुपये का ऋण लेकर स्कूली बच्चों के लिए स्टेशनरी और खाने-पीने की एक छोटी सी दुकान शुरू कर दी।

वर्ष 1990 में हलधर ने पहली कविता 'ढोड़ों बरगाछ' (अर्थ: 'पुराना बरगद') नाम से लिखी, जिसे एक स्थानीय पत्रिका ने छापा और उसके बाद हलधर की सभी कविताओं को पत्रिका में जगह मिलती रही और वे आस-पास के गाँवों से भी कविता सुनाने के लिए बुलाए जाने लगे। लोगों को हलधर की कविताएँ इतनी पसंद आईं कि वे उन्हें 'लोक कविरत्न' के नाम से बुलाने लगे। इन्हें 2016 में भारत के महामहिम राष्ट्रपति के द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया। ऐसे जीवित किंवदंती को ओड़िशा साहित्य अकादमी पुरस्कार (2014), पद्मश्री पुरस्कार (2016), लाइफ अचीवमेंट सम्मान (2017) से सम्मानित किया जाना हम सभी के लिए गर्व और गौरव का विषय है।

संबलपुरी भाषा के बहुत सारे कवि उन्हें अपना आदर्श मानकर उनकी काव्य-शैली का अनुकरण कर रहे हैं, जिसे साहित्यिक भाषा में 'हलधर धारा' कहा जाता है। संबलपुर विश्वविद्यालय में हलधर नाग की कविताओं का एक संकलन 'हलधर ग्रंथावली-2' को पाठ्यक्रम का हिस्सा है और कई शोधार्थी उनके काव्य-प्रदेयों पर अनुसंधानरत हैं।

पंजीकरण लिंक -
https://forms.gle/XsRbmTZuydp1Wpf19

❖ हलधर नाग की प्रमुख कृतियाँ

1. लोकगीत 2.सम्पर्द 3.कृष्णगुरु 4. महासती उर्मिला 5. तारा मन्दोदरी 6.अछिया 7 बछर 8 शिरी समलाई 9.वीर सुरेन्द्र साई 10. करमसानी 11.रसिया कवि (तुलसीदास की जीवनी) 12.प्रेम पाइछन 13. राति 14. चएत् र सकाल् आएला 15. शबरी 16. माँ 17. सतिआबिहा 18. लक्ष्मीपुराण 19. सन्त कवि भीमभोई 20. ऋषि कबि गंगाधर 21 भाव 22. सुरुत 23. हलधर ग्रंथावली-1 (फ्रेंड्स पब्लिशर्स, कटक) 24.हलधर ग्रंथावली -2 (संबलपुर विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित)

सादा लिबास, सफेद धोती, गमछा और बनियान पहने नाग नंगे पैर ही रहते हैं। हिंदी सिनेमा के विख्यात गीतकार गुलजार ''वर्चुअल भारत' शृंखला में बनी डाक्यूमेंटरी फिल्म में उनके बारे में कहते हैं, ***"जब यह कवि अपने गाँव की जमीन पर चलता है तो लगता है पूरे ग्लोब पर चलता है और जब यह खुद से कहता है, यही लगता है इस ग्लोब पर बसे हर इंसान से बातें करता हैं। वह खुद से कहता है-- समुद्र से निथारी/माँ की छाती से बही/अमृत की बूंद/कवि की कलम पर उतरी है।"***

पद्मश्री एवं पद्म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित द्विभाषी (ओड़िया एवं अंग्रेजी) लेखक मनोज दास उनके बारे में लिखते है, ***"हलधर नाग के काव्य के अजस्र-स्रोत का प्रवाह अनवरत है, जिसे कोई नहीं बांध सकता है, काव्य में उनके द्वारा प्रयुक्त अलंकारों का बेहतरीन प्रयोग पाठकों के समक्ष अद्भुत काल्पनिक छबि प्रस्तुत करती है।"***

उत्कल विश्वविद्यालय के अंग्रेजी प्राध्यापक, जतीन्द्र कुमार नायक उन्हें विलियम कार्लोस मानते हुए लिखते हैं, ***"हलधर नाग की कविताएं पाठकों को नई आवाज़ और नई संवेदना प्रदान करती हैं, जिससे वे जीवित मनुष्यों की आवाज़ से जुड़ पाते हैं, जो जन सामान्य की रोजमर्रा की भावनाओं में अथाह गहराई से प्रतिध्वनि होती है। ग्लोबलाइज़ेशन की इस दुनिया में, जहाँ आजकल स्थानीय भाषा का अवमूल्यन होता जा रहा है, वहाँ हाशिए पर रह रहे लोगों के जीवन की रोज़मर्रा की मुहावरेदार भाषा के प्राचुर्य को उत्सव के रूप में मनाने की नितांत आवश्यकता है। हलधर नाग की शबरी पर आधारित रामायण का अविस्मरणीय पात्र हमें विलियम कार्लोस के इस महत्वपूर्ण कथन की याद दिलाता है कि स्थानिकता में ही केवल सार्वभौमिकता है।"***

हलधर नाग की संबलपुरी काव्यों और कविताओं का श्री सुरेंद्र नाथ ने अंग्रेजी में प्रोजेक्ट काव्यांजलि के तहत 'काव्यांजलि' के नाम से चार पुस्तकें जेनिथ पब्लिशर्स, कटक से प्रकाशित हुई हैं। हिंदी के लेखक, ओड़िया हिंदी के बीच सेतु दिनेश कुमार माली ने उनकी काव्य-कविताओं का हिंदी में अनुवाद 'हलधर नाग का काव्य-संसार' के नाम से किया है, यह कृति पांडुलिपि प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है।

हलधर द्वारा विभिन्न काव्यों की सर्जना, उसमें उनकी वैचारिक आयामों के महत्व के परिप्रेक्ष्य में उनके काव्यों का अध्ययन, अनुशीलन, आलोचनात्मक विश्लेषण, तुलना की बड़ी प्रासंगिकता है। उनकी सर्जना की लोकप्रियता ने उन्हें लोक कवि की संज्ञा दी है और लोगों की जुबानी पर भी उनकी कविता तांडव कर रही है। कल जाकर उनकी कविता लोक साहित्य कहलाता इसमें कोई बड़े आश्चर्य की बात नहीं। आमतौर पर लोक साहित्य

किसी व्यक्ति द्वारा लिखा नहीं होता है। हलधर नाग की कविता में लोक साहित्य की आत्मा है। उनकी कविता में लोक-कविताओं के कई अभिलक्षण हैं । काव्य की सहजता, साधारण जन जीवन के दृश्य, नैसर्गिकता, अनुभूतिजन्यता, प्रकृति की अनुगूंज, जुबानी कवि के रूप में जनसामान्य की संवेदना भी उनकी कविता की वस्तु बन गई है। लोक के तमाम प्रतीकों को अपनी कविता में स्थान देते हुए वे सहज लोक कवि सिद्ध हुए हैं। लोक साहित्य के तमाम अभिलक्षण उनकी कविता की अनूठी संपदा साबित हो रहे हैं। उनकी भावनाओं में राष्ट्र रंग भी है, विश्व संग की कामना है। अतः सहज ही वे लोक कवि हैं। इन्हीं तमाम बिंदुओं के आधार पर आधुनिक लोक साहित्य के समक्ष उपस्थिति समस्याओं, चुनौतियों, मुद्दों के लिए भी प्रत्यक्ष व परोक्ष समाधान खोजने की दृष्टि से विमर्श की बड़ी प्रासंगिकता है।

हलधर के काव्य का अनुशीलन, अनुसंधान, विश्लेषण तथा लोक साहित्य पर विमर्श की दृष्टि से प्रस्तावित संगोष्ठी में कई विचारणीय मुद्दे हैं, जैसे –

- हलधर नाग का काव्य-संसार
- हलधर नाग की गंगाधर मेहेर से तुलना
- हलधर नाग एवं गांधीवाद
- हलधर नाग के महाकाव्यों पर आलोचकीय दृष्टि
- वर्तमान युग में महासती उर्मिला की महत्ता
- हलधर नाग के मिथकों की सार्थकता
- हलधर नाग के वैचारिक संसार और काव्य-सर्जना की प्रासंगिकता
- विलुप्त होती भाषाओं के लोक साहित्य का संरक्षण
- आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में लोक-साहित्य के मूल्यों की प्रासंगिकता
- लोक-काव्यों में पर्यावरण
- लोक साहित्य में लोकोपकारी ज्ञान-स्रोत
- लोक साहित्य के संरक्षण में डिजिटल प्रौद्योगिकी की भूमिका

संगोष्ठी में इनके अलावा किसी भी प्रासंगिक विषय पर आलेख प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

❖ शोध-आलेखों का आमंत्रण

शोध-आलेख मौलिक और अप्रकाशित होना चाहिए। इच्छुक प्रतिभागी शोध-सार (200-250 शब्दों में) एम.एस. वर्ड में भेज सकते हैं। शोध-आलेख अधिकतम शब्द-सीमा 3000 शब्द ।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

शोध-सार प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि : 24.12.2020

शोध-सार की स्वीकृति के बाद पूर्ण आलेख प्रेषण के लिए अंतिम तिथि : 30.12.2020

संगोष्ठी का आयोजन जनवरी, 2021 में होगा। संगोष्ठी की तिथि तय होते ही सूचित की जाएगी।

❖ शोध-आलेख प्रस्तुति हेतु दिशा-निर्देश

आलेख में शीर्षक के नीचे आलेख लेखक का नाम तथा आलेख के अंत में पता, ई-मेल और मोबाइल तथा वाट्सैप नं. आदि शामिल करें। शोध-सार 200-250 शब्दों का हो, और संपूर्ण आलेख 3000 शब्दों तक सीमित हो। संदर्भसूची – एम.एल.ए. फार्मेट में। टंकित आलेख ही स्वीकार्य है। टंकित आलेख में मुद्रण संबंधी दोषों का ठीक से प्रूफ़ संशोधन के बाद ही आलेख प्रेषित किया जाए। मॉइक्रोसॉफ्ट वर्ड फाइल ही भेजें जिसमें सामग्री केवल यूनिकोड फांट (मंगल या एरियल यूनिकोड, नोटा सॉन्स आदि) में टंकित होना चाहिए।

❖ शोध-सार व शोध आलेख प्रेषण के लिए ई-मेल का पता:

kavihaldharnag.pu@gmail.com

संगोष्ठी के लिए स्वीकृत व संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेखों के लेखकों को उनके पूर्ण आलेख की प्राप्ति के पश्चात् ही तत्संबंधी ई-प्रमाणपत्र जारी किए जाएंगे। प्रतिभागियों को संगोष्ठी में उपस्थिति के पश्चात् प्रतिपुष्टि प्रपत्र भरने पर ई-प्रमाणपत्र जारी किए जाएंगे। आलेख-लेखकों, प्रस्तोताओं के लिए किसी भी प्रकार का मानदेय दिया जाना संभव नहीं है। आलेख-लेखकों व प्रतिभागियों के लिए संगोष्ठी में प्रतिभागिता के लिए पंजीकरण अनिवार्य है। पंजीकरण निःशुल्क है।

❖ पंजीकरण लिंक -

https://forms.gle/XsRbmTZuydp1Wpf19

(कृपया इस पर क्लिक कीजिए अथवा इस पते को ब्राउजर में चिपकाकर पंजीकरण फार्म भर दीजिए)

संगोष्ठी संयोजक

डॉ. सी. जय शंकर बाबु / Dr. C. JAYA SANKAR BABU

हिंदी विभाग / DEPARTMENT OF HINDI

पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय / PONDICHERRY UNIVERSITY

पुदुच्चेरी / PUDUCHERRY - 605 014